Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

कृषि एवं कृषि पर आधारित उधोगों की चुनौतीयों का विशलेषणात्क अध्ययन

रामदेव गुर्जर	(बी.ए., एल.एल.बी., एल.एल.एम.) शोध विध्यार्थी, भगवन्त विष्वविद्यालय अजमेर (राजस्थान)
डॉ. दुष्यन्त कुमार	विधि विभाग (सहायक आचार्य)

ABSTRACT:

KEYWORDS:

1. भूमिका :–

भारत देष विष्व का एक मात्र देष है जहां अधिकाधिक कृषि भूमि पर आधारित है कृषि पर निर्भर रहकर ही उधोग का विकास होना सम्भव है देष में जब कृषि का विकास होगा या कृषि उत्पाद अधिक उपलब्ध होगे, जिन के प्रयोग के लिये उधोग स्थापित करने पडगें। देष का एक भाग जहां पर उत्पाद कम हो वहां भोजन के लिये यातायात तथा ढुलाई की आवष्यकता पडेगी। अधिक अनाज को संभालने के लिये गोदामो की आवष्यकता पडेगी। कृषि के साथ जुडे कुछ उधोग चीनी उधोग, पटसन, शोलर उधोग, कपड़ा उधोग, षौलर तेल निकालने वाले कारखाने आदि इस तरह कृषि विकास उधोगों के विकास में योगदान डालेगा, परन्तु कृषि का विकास होता रहे इसलिये कृषि में कुछ उत्पादों की आवष्यकता पडेगी, जैसे ट्रेक्टर उधोग, मषीनरी, खादे, कीटनाषक आदि रसायनों से सम्बन्धित उधोग जिनके उत्पाद कृषि में प्रयोग होते है भारत में प्रत्यक्ष तौर पर 54: मजदूर कृषि में लगे हुये है भारत का कुल कृषि निर्यात 42 बिलियन डालर है। कृषि आधारित उधोग देष के भीतर और बाहर प्रतिस्पर्धा लाभ की धारणा के अनुरूप है व अधिषेष ग्रामीण श्रम को रोजगार प्रदान करने के लिए एक सुरक्षा कवच की भूमिका निभा सकते है और ग्रामीण क्षेत्रों में बडे पैमाने पर बेरोजगारी, प्रच्छन्न रोजगार की समस्याओं का समाधान कर सकते है यहां वास्तविक चुनौती यह है कि सरकार अपनी योजनाबद्व और नीतिगत हस्तक्षेप को कितने प्रभावी ढंग से लागू करती है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी सामाजिक, आर्थिक संरचना, कृषि उत्पादन प्रणाती और बुनियादी कृषि विनिर्माण विषेषताओं की पहचान को कम किये बिना सर्वागीण औद्योगिक विकास सुनिष्चित किया जा सके। विकासषील राष्ट्रो की आर्थिक नीतियों ने हमेषा न केवल उत्पाद आर उत्पादकता वृद्वि के माध्यम बल्कि प्रसंस्करण और विनिर्माण के माध्यम से कृषि उत्पादों में प्रणालीगत मूल्य संबर्धन द्वारा की आय बढाने की वकालात की है भारत की विषाल जनसंख्या अभी भी कृषि और सम्बद्व गतिविधियों में लगी हुई है भारतीय किसान काफी हद तक असंगठित है वे अपने विपणव योग्य अधिषेष के निपटाने के लिये बहारी एजेन्सीयों पर निर्भर रहते है ग्रामीण क्षेत्रों में पूंजीगत सम्पति की बाजी के कारण उन्हे बिचोलियों/कमीषन एजेन्टो को अपनी उपज के लिये मजबूर होना पड़ता है। प्राथमिक कृषि उत्पादन से कम आय और प्रसंस्करण तथा कृषि मूल्य श्रृखला में निवेष की कमी के कारण कृषि के मुनाफे में तेजी से कमी आई है एवं कृषि कार्य गम्भिर दबाव में आ गया है इसी प्रकार औपनिवेषिक काल में अग्रेजो ने देष के परम्परागत उधोगो को तहस–नहस कर दिया ब्रिटिष सरकार ने न तो बनाने का कोई प्रयास और न ही उनके स्थान पर आधुनिक उधोगो की स्थापना के लिये कोई ठोस कदम उठाये यही नहीं सरकार ने तकनिकी षिक्षा प्रणाली, पूंजी, वित जैसी आवष्यक सुविधाओं की व्यवस्था में भी सक्रिय भाग नहीं लिया यहां तक की सरकारी खरीद के सिल–सिले में भी भारतीय उधोगो को छोड़कर ब्रिटिष (विदेषी) उधोगो को प्राथमिकता दी जाती थी ऐसी परिस्थितियों में देष में आधुनिक उधोगो का विकास संभव नहीं था आज भारत में कृषि उधोग सबसे महत्वपूर्ण आयाम है। जिसके द्वारा देष विकासषील से विकसित होने का प्रमाण सिद्व कर सकता है देष का सर्वोतम विकास तभी संभव है जब तक कृषि व उधोग का विकास नही होगा भारत का विकास संभव नहीं होगा।

2. कृषि आधारित उधोग–परिभाषा और प्रकार :–

ग्रामीण क्षेत्रों और उनके आस–पास कृषि आधारित उधोग का विकास कृषि को स्वीकार्य और आकर्षक बनाने तथा स्थिरता प्रदान करने की क्षमता रखता है ''कृषि'' **प्रो0ई0डब्लू0 जिम्मरमैन (E.W. Zimmermann) द्वारा लिखित बुक** और ''उधोग'' एक सर्वव्यापी अभिव्यक्ति है जिसमें विभिन्न औधोगिक, प्रसंस्करण और विनिर्माण गतिविधियों का समावेष कृषि पर आधारित कच्चे माल पर होता है और उन गतिविधियों और सेवाओं को भी समाहित करता है जो इनपुत के रूप में कृषि से प्राप्त होती है कृषि और उधोग किसी भी विकासषील राष्ट्र की विकास प्रक्रिया में उनकी परस्पर निर्भरता और आपसी सम्बन्धों के कारण एक दुसर के पूरक है कृषि उधोग को इनपुट प्रदान करती है और औधोगिक उत्पादन का उपयोग कृषि में इसके उत्पादन और उत्पादकता आधार का विस्तार करने के लिये किया जाता है इस प्रकार कृषि उधोग न केवल कृषि से प्राप्त कच्चे माल का उपयोग करने वाली गतिविधियों को शामिल करता है बल्कि उन्हे भी शामिल करता है जो आधुनिक कृषि व्यवसाय के लिये इनपुट भी प्रदान करता है इनपुट–आउटपुट अनुबन्धन और कृषि व उधोग एक दुसरे पर आधारित होने के कारण कृषि उधोग दो प्रकार के हो सकत है। (क) प्रसंस्करण उधोग या कृषि आधारित उधोग (ख) इनपुट आपूर्ति उधोग या कृषि उधोग न इस प्रकार प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादन और उत्पादकता वृद्वि के लिये तैयार और विनिर्माण आदानों के माध्यम से कृषि समर्थन करने वाली एजेन्सियों को कृषि उधोग कहा जाता है जबकी कृषि आधारित उधोग प्रक्रिया और मूल्य ऐसे कृषि संसाधनों को जोडते है जिनमें जमीन और पेड़–पौधे, फल–सब्जियों इत्यादी के साथ–साथ उनके दिन–प्रतिदिन के कार्यो में उपयोग पशुधन शामिल है अन्तराष्ट्रिय मानक उधोगिक वर्गीकरण ढांचे के अनुसार कृषि आधारित उधोग में से खाद्य और पेय, कपडा, जूते और परिधान, चमड़, रबर, कागज और लकडी, तम्बाकु उत्पादन के विनिर्माण/ प्रसंस्करण शामिल है।

रॉबर्ट हिल्सन ने अपनी पुस्तक ब्वनदजतल दवज कमअमसवच हतपबनसजनतम पदकनेजतल के अध्याय 4 के पृष्ठ संख्या 13 में अंकित है कि ''किसी भी देष के उत्थान एवं आत्म निर्भरता के उधोग विकसीत करना आवष्यक है जिससे आम नागरीक देष की अर्थव्यवस्था को प्रगतीषील बना सकें। भूमी उत्पादन की वृद्वि भी हो सकें''

रॉबर्ट हिल्सन पुस्तक ब्वनदजतल दवज कमअमसवच हतपबनसजनतम पदकनेजतल

3. कृषि–आधारित उधोगो को बढावा क्यों?

भारत में विष्व की 10वी सबसे बडी कृषि योग्य भूमि, 20 कृषि जयवायु क्षेत्र और 15 प्रमुख जलवायु जनगणना के आंकडों से पता चलता है कि वर्ष 2001 में देष में कुल कृषकों की संख्या 12.73 करोड़ से घटकर 11.88 करोड़ कृषक रह गई है इस का करण प्रसंस्करण और विनिर्माण के माध्यम से मूल्य संवर्धन अपव्यय में कमी और वृद्विषील आप पर पर्याप्त ध्यान दिये बिना भारतीय कृषि का अत्यधिक उत्पादोंन्मुखीकरण हो ना हो सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सैन्ट्रल इस्टीट्पुट ऑफ पोस्ट आर्वेस्ट इंजिनियरिंग एंड टेक्नोलोजी ने अपनी वर्ष 2015 की रिपोर्ट में ''भारत में वस्तुओं और प्रमुख फसलों की कटाई और कटाई के उपरान्त होने वाली मात्रात्मक हानियों का आकलन'' षिषर्क से रिपोर्ट दी है रिपोर्ट के अनुसार कृषि .जिंसों की कटाई और कटाई के बाद का नुकसान अनाज के लिये 4.65–5.99 प्रतिषत, दालों के लिये 6.36–8.41 प्रतिषत, तिलहन के लिये 3.08–9.96 प्रतिषत फलों के लिये 6.7–15.88

और सब्जियों के लिये 4.58–12.44 होते है मात्रात्मक नुकसान का कुल अनुमानित आर्थिक मूल्य 2014 की ओसत वार्षिक कीमता पर 9651 करोड़ रूपये पाया गया, इस प्रकार नुकसान को काफी हद तक कम करने आधुनिक कृषि प्रसंस्करण प्रोधोगिक के संवर्धन और उसे अपनाने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक संख्या में कृषि उधोग की स्थापना करना समय की मांग है

कृषि अर्थव्यवस्था के समग्र विकास का यही सही अवसर है क्योंकि शायद ही 2 से 3 प्रतिषत कृषि वस्तुओं का प्रसंस्करण किया जाता है भारतीय कृषि में मौजूदा मूल्यों में आ रही कमी की परिदृष्य को ध्यान में रखते हुये ग्रामीण क्षेत्रों में निवेष करना आवष्यक है ताकि उपयुक्त बुनियादी ढॉचे का विकास हो सके और ग्रामीण क्षेत्रों में तथा आस–पास के आधुनिक कृषि आधारित उधोगो की स्थापना के लिये निजी, सार्वजनिक भागीदारी को आकर्षित किया जा सके।

कृषि में नवाचार : समृद्वि की ओर बढते कदम लेखक : डॉ. सुरेन्द्र कोठारी, डॉ एस.के. शर्मा, डॉ. रेखा व्यास

4. कृषि से उधोगो की विशेषताएं :–

भारत में कृषि से उधोग का विकसीत करने के लिए तीन श्रेणियों में बाटा जा सकता है (1) फल एवं सब्जी प्रसंस्करण इकाइयों (2) चीनी, डेयरी, बेकरी, साल्वेंट निकर्षण इकाइयों (3) कृषि : कृषि ओजार, बीज उधोग, सिचाई उपकरण, उर्वरक कीटनाषक आदि के मषीनीकरण को शामिल करने वाली कृषि इनपुट निर्माण इकाइयों तालिका–2 में उपलब्ध जानकारीयों की समीक्षा से, भारत के कृषि आधारित उधोग की जटील और विविधतापूर्ण को दर्षाया गया है, ग्रामीण और कृषि आधारित उधोग उत्पादन वितरण, विनिर्माण और विपणव चरणो में रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करते है तालिका–3 चुनिदा कृषि उधोगो की प्रमुख विषेताओं का परिक्षण करती है वर्ष 2017–2018 में कृषि आधारित उधोगो का 45.3 प्रतषित कुल शुद्ध मूल्य संर्वधन के लिये केवल 24.11 प्रतिषत साझा किया गया, भले की कुल श्रमिकों का 44.2 प्रतिषत इस क्षेत्र में लगे हुये थे इससे पता चलता है कि कृषि आधारित उधोगिक परिदृष्य में स्थाई रूप से उपलब्ध संसाधनों और सरकार द्वारा विभिन्न सर्वसिद्वी–उन्मुख केन्द्रिय योजनाओं के माध्यम से किये गये प्रयासों के लाभों को पूरी तरह से भुनाया नहीं है वर्ष 2017–2018 में कुल 1.07 लाख कृषि आधारित उधोगो में आसान मुद्वो की पहचान करने और समयबद्व तरिके से हल करने से कृषि आधारित उधोगो को अधिक दृष्यमान और परिश्रमिक बनाने की एक बडी क्षमता है चुनिदा सरकारी पहल की समीक्षा।

(अ) खाद्य प्रसंस्करण और पेय पदार्थ :–

खाद प्रसंस्करण उधोग मंत्रालय, खाद प्रसंस्करण उधोगो और मुल्यर्वधन गतिविधियों को बढावा देने के लिये विभिन्न केन्द्रिय क्षेत्र की योजनाओं का लागू करता है इसने हाल ही में नई केन्द्रिय क्षेत्र योजना प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना (पी.एम.के.एस.वाई.) के तहत अपनी योजनाओं को 2016–20 की अवधि के लिये रूपये 6000

जैविक कृषि में उद्यमिता विकास एवं रोजगार के अवसर, लेखक : रोशन चौधरी, डॉ अमित त्रिवेदी, डॉ हेमन्त स्वामी एवं डॉ. एस.के. शर्मा

करोड़ के आवटन के पुनः संरचित किया है योजना में निम्नलिखित घटक सस्थापित किये गये है (अ) मेगा फूड पार्क (ब) एकीकृत कोल्ड चेन तथा मूल्यवर्धित आधारभूत ढांचा (स) खाद्य सुरक्षा और गुणवता आवष्वासन आधार मूल ढांचा (द) मानव संसाधन विकास तथा संस्थाएं प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजनाएं शामिल है कृषि प्रसंस्करण समुहों के लिए आधारभूत संरचना, विनिर्माण तथा खाद्य प्रसंस्करण सरक्षण इकाइयों की स्थापना में सम्पूर्ण मूल्यों की श्रृखला के लाभ मजबूत आधुनिक बुनियादी ढांचा का निर्माण करने के उद्वेष्य से खाद्य प्रसंस्करण और संरक्षण क्षमता का निर्माण (विस्तार) प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना (पी.एम.के.एस.वाई.) के घटक जैसे एकीकृत कोल्ड चेन और मूल्यवर्धन आधारभूत ढाचा एवं विनिर्माण और विपणव सुविधाओं का निर्माण, कृषि उत्पादन की कराई और फसल के बाद के नुकसान को कम करने और ग्रामीण गैरकृषि क्षेत्र में परिश्रमिक आय और पर्याप्त रोजगार सुनिष्चित करने में बहुत महत्वपूर्ण है।

(ब) कपडा उधोग :–

कपडा उधोग को अत्यधिक रोजगार प्रदान करने वाला माना जाता है यह 4.5 करोड़ लोगो को सीधे और अन्य 6 करोड़ लोगो को सम्बद्व क्षेत्रो में रोजगार प्रदान करता है जिसमें बडी संख्या में महिलाएं और ग्रामीण आबादी भी शामिल है भारतीय कपास, कपड़ा उधोग काफी हद तक अंसगठित है ओर उच्च उत्पादन तथा श्रम लागत से ग्रस्त है उधोग के अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे है पुरानी होती मषीनरी कच्चे माल की गुणवता और घरेलु व अर्न्तराष्ट्रिय बाजारों में मुल्यवर्धित कपास उत्पादों क लिये समुचित स्तर का अभाव वस्त्र उधोग को विष्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा बनाने, निर्यात को बढावा देने और आधुनिकरण को सुविधाजनक बनाने की दृष्टी से सरकार नई योजनाबद्व पहल की है जैसे कि एकीकृत प्रसंस्करण विकास योजना समुहबद्व कार्य योजना, सामान्य सुविधा केन्द्र तथा संषोधित प्रोधोगिक उन्नयन नीधी योजना (पावरट्रेक्स) समर्थ कपड़ा उधोग क्षेत्र में क्षमता निर्माण की योजना, व्यापक हथकरधा, समुह विकास योजना, राज्य और केन्द्र का कर ओर लेवी छुट जिससे उधोग व कृषि बढावा मिल सकें।

(स) जुट उधोग :–

भारत में जुट उधोग की स्थापित क्षमता 16.5 लाख मीट्रिकटन है, जिसमें से 11.5 लाख मेट्रीक टन जुट का उत्पादन होता है ऐसा अतिरिक्त क्षमता विपणव और आधुनिक तकनीक और उपकरणों को लाने का प्रयास किया है राष्ट्रीय जुट बोर्ड योजनाबद्व हस्तक्षेप एवं अन्य बातो के साथ–साथ जुट मीलों को उनके मुद्वो और चुनोतियों को हल करने के लिये पंजीगत आर्थित सहायता प्रदान करता है।

(द) खादी और ग्रामोधोग :–

देष में सुक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय का खादी और ग्रामोधोग आयोग विभिन्न फसल उपरान्त कृषि और खाध आधारित सुक्ष्म उधोगो की स्थापना को बढ़ावा देता है जैसे दालों और अनाज, फलो और सब्जियों का प्रसंस्करण, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के माध्यम से खादी ग्रामोधोग आयोग गैर–कृषि क्षेत्र में सुक्ष्म उधोगो की स्थापना के माध्यम से स्वरोजगार के अवसर पैदा करने को कोषिष करता है जिससे अन्य बातो का समावेष है (1) कृषि आधारित और खाध प्रसंस्करण उधोग (2) वन आधारित उधोग (3) हस्त निर्मित कागजों और फाइबर, कपड़ा उधोग आदि।

(ड) पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन :–

रोजगार और आय सृजन क्षमता को ध्यान में रखते हुये, सरकार विभिन्न योजनाओ को लागू करती है जैसा कि इस उपक्षेत्र में कृषि आधारित उधोगो को बढ़ावा देने के लिये डेयरी गतिविधियों में डेयरी उघमिता विकास योजना, डेयरी प्रसंस्करण और अवसंरचना विकास कोष, डेयरी गतिविधियों व प्रबन्धन तथा मत्स्य पालन एवं मत्स्य पालन आधारभूत सरंचना विकास निधि का समावेष।

5. कृषि आधारित उधोग मुद्वो और समस्याओं की समीक्षा :–

कृषि आधारित औधोगिक क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्रों में समान आय और रोजगार के अवसरों को सुनिष्चित कराने के लिये अपनी उच्च क्षमता को बावजूद अविकसित रह गया है उपलब्ध जानकारियों की समिक्षा/इंगित करती है कि भारत में कृषि आधारित

प्रो0 डी0 हिटलसी के कथनानुसार

इकाइयों के प्रलबिंत मुद्वो का समाधान किया जाना है जैसे कि वित, औधोगिक नीति, अनुसंधान और विकास बुनियाद, सुविधाएं विपणव, उत्पादन और मानव संसाधन सम्बन्धी चिंताएं । तालिक–4 भारत में कृषि आधारित उधोगो के समक्ष समस्याओं एवं सम्बद्व प्रमुख मुद्वो को दर्षाया गया है भारत सरकार व राज्य सरकार में कृषि से सम्बन्धित योजनाओं में करोडो रूपये का बजट आने के बावजूद में कृषि आधारित उधोग विकसित नही हो रहे है जिसका प्रमुख कारण डवदवचवसल (एकाधिकार) है, एवं भष्ट्र नेताओं व अफसरों द्वारा भष्ट्राचार व गबन प्रवृति के कारण विकास नहीं हो रहा है इस प्रक्रिया पर पूर्णतः रोक लगाकर धरातल स्तर पर योजनाओं का विकास करने हेतु आम आदमी को जागृत करे जिससे भावी योजना के तहत भारत देष विकासषील से विकसीत हो सके एवं नई तकनीकी सुलभ करवाकर आम कृषक को प्रेरित करने हेतु आयाम उत्पन्न करे एवं भारतीय योजनाकारों और नीति निर्माताओं ने हमेषा ग्रामीण ओर कृषि औधोगिकरण को प्रोत्साहित किया है कृषि उधोगो के निहित लाभ स्थानीय कृषि संसाधनों का अधिकतम उपयोग, बडे पैमाने पर निवेष को जुटाना, बडे–बडे उधोगपतियों विदेषी कम्पनीयों को सुलभ सुविधा देकर भारत में उधोग स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित करे एवं विष्व पैमाने पर प्रचार–प्रसार करे ताकि योजनाओं के अन्तर्गत सभी व्यक्ति, संस्था उधोग स्थापित करने हेतु वातावरण प्रदान करें। रोजगार अवसरों का सृजन संकटपूर्ण ग्रामीण–षहरी प्रवास की रोकथाम, क्षेत्रो में असमानता में कमी लाना है इन उधोगो में गांवो में प्रचार, लाभदायक व्यवसाय, गतिविधियों विविधिकरण के लिये एक विस्तृत, विष्वसनीय और टिकाऊ मॉडल पेष करने की क्षमता है। यह उधोग मुद्वो तथा चुनोतियों से परे नहीं है सरकार विभिन्न

हाल ही में माननीय उपराष्ट्रपति एम0वेंकैया नायडू ने अपने एक संबोधन में ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योगो को बढावा देने की आवष्यकता पर जोर दिया है ताकि ग्रामीण युवाओं के लिये रोजगार के अवसर पैदा किये जा सकें। उन्होने संबद्व

उपराष्ट्रपति एम0वेंकैया नायडू की पुस्तक ऑटोक्रेट से उद्वरित

गतिविधियों के साथ किसानों की आय बढाने में कृषि–उद्योगो की भूमिका पर भी जोर दिया।

केन्द्रीय योजनाओं ड.|झ्म प्छ प्छक्प्। (भारत निर्माण) स्टार्टअप इन्डिया जैसे नवीन प्रयासों के द्वारा अत्याधुनिक कृषि औधोगिक आधारभूत संरचना सुनिष्चित करने की कोषिष कर रहा है कृषि आधारित उधोग देष के भीतर और बाहर प्रतिस्पर्धा लाभ की धारणा के अनुरूप है। वे अधिविषेष ग्रामीण श्रम को रोजगार प्रदान करने के लिये एक सुरक्षा कवच की भूमिका निभा सकते है और ग्रामीण क्षेत्रों में बडे पैमाने पर बेरोजगारी को योजनाओं लाभान्वित करके कृषि उधोगो के लिये प्रोत्साहित करे एवं पिछडे क्षेत्रों

का ओधोगिकरण, बिमार औधोगिक इकाइयों का पुनः बहाल करना, अविष्कारों की प्रगति तथा आयात प्रतिस्थापित कर विदेषों से कच्चा माल तथा नई तकनिकी में आत्मनिर्भरता के लिये 1966 में आयात प्रतिस्थापन बोर्ड की स्थापना की गई जिससे केन्द्र सरकार इन योजनाओं का सुअवसर व राहत देष में अविष्कारों की प्रगति के लिये 1960 में अविष्कार उन्नति बोर्ड की स्थापना की गई परन्तु बजट व केन्द्र सरकार की उदासीनता के कारण विकास के आयम में औपचारिक गठन हो रखा है जबकि सरकार द्वारा बजट व ईमानदार प्रषासकों की नियुक्ति कर सुचारें रूप से आम जनता तक परिलाभ से जोडा जाना चाहिए। भारत की 70 प्रतिषत जनसंख्या खेती पर निर्भर करती है इसके फल स्वरूप खेती काफी पिछडी हुई है उधोग के विकास के कारण कृषि पर जनसंख्या का दबाव कम हो जायेगा इससे कृषि उधोग का आकार बढेगा व खेती को अधिक उन्नति हो सकेगी। भारत को आत्मनिर्भरता के आयाम अपनाने चाहिए जिससे सभी वस्तुयें भारत में उत्पन्न होने लगेगी कृषि एवं उधोग ही भारत में उत्पन्न होने लगेगी कृषि एवं उधोग ही भारत देष को विकसीत करने में अहम योगदान हो सकता है जिस देष की कृषि उधोग पिछडा ह उस देष में निर्धनता का प्रवेष हो जाता है जो निर्धनता उस देष को दीमक की तरह अन्दर से खोखला कर देती है एवं देष की आर्थिक स्थिति का ढांचा खोखला हो जाता है तब उस देष की आन्तरिक व बाहाय शक्ति शुन्य हो जाती है।

कृषि के प्रमुख प्रकारः–

स्थानान्तरणषील कृषि, प्रारम्भिक स्थायी कृषि, व्यापारिक पशुपालन, चलवासी पशुपालन, चावल प्रधान गहन निर्वाहन कृषि, चावल विहीन गहन निर्वाहन कृषि, व्यापारिक बागाती कृषि, भूमध्य सागरीय कृषि, व्यवस्थाव्यापारिक खाद्यान्न उत्पादन कृषि, व्यापारिक शस्य व पशु उत्पादक कृषि, जीविकोपार्जन फसल व पशु उत्पादक कृषि, व्यापारिक दुग्ध पशुपालन कृषि, विषिष्टीकृत उद्यान कृषि

पंडित जवाहरलाल नेहरू जी द्वारा देषवासियों से मिले स्नेह–प्रेम के प्रति कृतज्ञ पंडित नेहरू जी ने अपनी वसीयत में लिखा था, कि मुझे भारत के लोगों ने इतना प्यार और स्नेह मिला है कि मैं इसका एक छोटा सा अंष भी उन्हें लौटा नहीं सकता और वास्तव में स्नेह जैसी मूल्यवान चीज के बदले में कुछ लौटाया भी नहीं जा सकता, **उन्होने लिखा कि मेरी राख का हिस्सा वतन को सपर्मित ''मैं चाहता हूँ कि जब मेरी मृत्यु हो तो मेरे शरीर का दाह संस्कार कर दिया जाए, यदि मेरी मृत्यु विदेश में होती है, तो मेरा दाह संस्कार वही कर दिया जाये और मेरी राख को इलाहाबाद भेज दिया जाए, इसमें से मुठ्ठीभर राख प्रयाग के संगम में बहा दी जाए जो हिन्दुस्तान के दामन को चूमते हुए समंदर में जा मिले, मेरी राख का ज्यादा हिस्सा हवाई जहाज से ऊपर ले जाकर खेतों में बिखेर दी जाए, वो खेत जहां हजारों मेहनतकश इंसान काम में लगे है, ताकि मेरे वजूद का हर जर्रा वतन की खाक में मिलकर एक हो जाए, इस राख का कोई भी हिस्सा न ही बचाकर रखा जाए और न संरक्षित किया जाए''**

पंडित जवाहर नेहरू जी द्वारा वसीयत में अपनी राख को खेतों में बिखेरने हेतु लिखा गया हैं

REFERENCES

NO REFERENCES